Lecture - 14

गाँधी एवं उनके सत्य अहिंसा का दर्शन

- Mamta Rani
Guest Assistant Professor
SNSRKS College,
Saharsa
Deptt. of History.
BA Part - 3rd.

(6)

गाँधी जी ने अपने अहिंसा दर्शन में आत्मशुद्धि पर बल दिया। यहाँ आत्मशुद्धि से मतलब है स्वयं पर नियंत्रण और बाह्य आचरण एवं आंतरिक आचरण का एक होना।

वो कहते हैं कि

"प्रेम एवं अहिंसा का प्रभाव अद्वितीय है, किन्तु सभी प्राणियों के साथ तादात्म्यता बिना आत्मशुद्धि के असंभव है। आत्म-शुद्धि के बिना अहिंसा धर्म का पालन थोथा स्वप्न ही रहेगा। इसलिए आत्मशुद्धि का अर्थ जीवन के सभी पहलुओं में शुद्धि होनी चाहिए।"

An Autobiography
writer - M.K. gandhi
Page - 615
Publisher - ~~Public affairs~~
Public affairs
Press, washington
DC

अहिंसा अपनाने वाला मन (1)

मनुष्य के विषय में जितनी भी अटकलें आज लगाई जाती हैं, शायद ही कभी लगाई जाती होंगी।

क्या हमारी दुनिया में इसी तरह हमेशा हिंसा का बोलबाला, क्या हमेशा ऐसे ही दरिद्रता, खूनखराबी और दुःख दर्द कायम होगा. क्या इसी धर्म का ह्रास होगा और दुनिया नास्तिक होती जाएगी। इन सारे प्रश्नो के जवाब हर व्यक्ति के पास अलग अलग है।

किन्तु गांधी जी ने कहा कि कल का समाज अहिंसक होगा - ऐसा नहीं होगा। और ये बात इन्होने केवल विश्वास के सहारे नहीं कहा बल्कि धारणा के बल पर कहा। एक दुर्लभ सत्य अव्यवहारिक लग सकता है, किन्तु अप्राप्य नहीं है जरूरत है तो बस गांधी जी के बताये अहिंसक मार्ग पर चलने की, आत्मशुद्धित हृदय से अहिंसा धर्म का पालन करने की हर बस द्वेष, विवाद और तनाव की मनोवृत्ति को बस बदलने की जरूरत है। फिर ये सत्य बहुत आसान है।

(5)

किन्तु अहिंसा का सिद्धांत केवल और केवल ऐसे व्यक्तियों द्वारा ही प्रचारित हो सकता है जो अहिंसा के सिद्धांत पर अटूट आस्था रखते हुए बलिदान होने का सामर्थ्य रखते हों।

अहिंसा एक व्यापक सिद्धांत है। हम हिंसा की ज्वाला में फँसे हुए असहाय प्राणी हैं। मनुष्य जाने अनजाने बाह्य हिंसा किये बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, खाने, पीने एवं चलने फिरने में उससे कोई ना कोई हिंसा हो ही जाती है, किन्तु वह यदि छोटे से छोटे जीवों को भी नष्ट ना करने एवं हिंसा से अत्यधिक परहेज करता है तो वह ईमान का सच्चा होता है। गाँधी जी के अनुसार मानव जाति के हाथ में अहिंसा सबसे बड़ा बल है। मनुष्य की बुद्धि ने विनाश के जो प्रबल से प्रबल हथियार निकाले हैं यह उससे भी प्रबल है। विनाश मानव का धर्म नहीं है। प्रत्येक हत्या या आघात, मानवता के विरुद्ध है।

" बहुत से लोगों ने गाँधी जी को साम्यवादी भी कहा। किन्तु साम्यवादियों ने उनके साम्यवाद का विरोध किया। इतना होते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि समता, स्वतंत्रता एवं विश्व बंधुत्व की भावनाओं को वो साम्यवादियों से कम नहीं मानते थे। वे हमेशा से हिंसक क्रांति की जगह अहिंसा के पक्षधर थे।
– गाँधी का दर्शन, Page - 218, रमनलाल सोनी

वो सिखते हैं." जो [illegible] व्यक्ति मृत्यु का सामना करते हुए अहिंसक ढंग से अपने प्रियजनो एवं उनके आत्मसम्मान की रक्षा नही कर सकते उनको शत्रु के साथ हिंसक संघर्ष करना चाहिए - उन्हे ऐसा जरूर करना चाहिए। जो इन परिस्थितियो में ऐसा नहीं करता है वो धर्म का भार है। वह परिवार का मुखिया होने लायक नही है। वह या तो कही छुपकर जा बैठे या सदा के लिए लाचारी की जिंदगी जीने और दबंगो के आगे कीड़े की तरह रेंगने के लिए तैयार रहे।' ([illegible] यंग पत्रिका, 4/1/1930-Pg. 27)

अहिंसा पर गाँधी के विचारो को सही से आम जनो तक नही पहुँचाया गया, वो [illegible] कहते थे कि अहिंसा जो कायर मनुष्यो के लिए है, अहिंसा एक प्रयोग है, जो हमे प्रतिरोध करना सिखाता है कायर कभी भी अहिंसा के रूप सत्य को नही जान सकते।

अहिंसा संसार का सबसे महान सिद्धांत है, ये उच्चतम आदर्श है।